Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

Shiv Narayan[1]* Dr. Rashmi Gore[2]

[1] Senior Research Fellow, Education Department, Chatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur, 208024

[2] Assistant Professor, Education Department, Chatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur, 208024

शोध सारांश - *विश्व के प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आकांक्षा होती है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के परिणाम को सही एवं सटीक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। अध्यापक अपने विद्यार्थियों (उत्पादों) के शैक्षिक उपलब्धि (गुणवत्ता) की जानकारी के लिए मापन और मूल्यांकन की विविध प्रविधियों का प्रयोग कर करते हैं। क्योंकि आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पक्ष है तथा जीवन के विभिन्न क्षत्रों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः शोधार्थी के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अन्तर है? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधाकर्ता ने इस अध्ययन हेतु 200 उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों तथा 200 निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में लिया। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धियों वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया। जबिक उनके आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक व उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक में सार्थक अन्तर नही पाया गया। विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के विकास के उचित अवसर दिये जायें जिससे छात्रों को निर्णय लेने एवं उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो। उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव उसके भिन्न पक्षों एवं आकांक्षा स्तर पर पड़ता है, छात्रों के आकांक्षा स्तर का ज्ञान हो जाने पर छात्रों के आकांक्षा स्तर निर्धारण में सही तरीके से निर्देशन एवं परामर्श दिया जा सकें। जिससे छात्रों के आत्म विश्वास में वृद्वि होगी तथा विद्यार्थियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारण उत्पन्न कुण्ठा, तनाव एवं अवसाद को शिक्षकों एवं अभिभाविकों द्वारा उचित निर्देशन व परामर्श देकर दूर किया जा सकता है, इस तरह विद्यार्थियों के सुसमायोजित व्यक्तित्व से सुसंगत समाज का निर्माण हो सकेगा।*

मुख्य शब्द: *माध्यमिक स्तर, उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि, आकांक्षा स्तर।*

----------X----------

प्रस्तावना:

आज के प्रतिस्पद्र्धात्मक युग में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए उनके व्यक्तित्व के एक अति महत्वपूर्ण पक्ष आकांक्षा स्तर पर भी ध्यान दिया जाय। अतः शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है, जो किशोरों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी है। इसी सन्दर्भ में भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) के कथन से और अधिक स्पष्ट हो जाता है, "कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है"। शिक्षा के सम्बन्ध में एक उपयुक्त उदाहरण जापान का दिया जा सकता है, जो द्वितीय विश्वयुद्ध में दो परमाणु बमों का दंश झेलने के बाद भी आज अपनी अच्छी शिक्षा व्यवस्था एवं प्रशासन के कारण ही विश्व में एक नई शक्ति के रूप में पुनः स्थापित हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान एक उभरता हुआ विषय है जिसने अपनी आवश्यकता एवं उपयोगिता से विश्व को परिचित कराया है। आज मनोविज्ञान के विकास के कारण ही शिक्षा का केन्द्र विन्दु बालक हो गया है।। शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के पूर्व तक शिक्षक को शिक्षा में केन्द्रीय स्थान प्राप्त था। वर्तमान समय में मनुष्य को एक विवेकशील मनो-सामाजिक प्राणी माना जाता है, जबकि मनुष्य जन्म से न तो सामाजिक प्राणी है और न ही असामाजिक प्राणी। वह समाज के साथ अन्तःक्रिया करके सामाजिक प्राणी बनता है। बालकों का अधिकांश व्यवहार का विकास परिवार, समाज, समव्यस्क

www.ignited.in

समूह, सम्प्रदाय के रीति रिवाज एवं उसके विद्यालय के वातावरण द्वारा निर्धारित होता है। यदि इनका वातावरण अनुकूल होता है तो छात्रों का विकास सन्तुलित रूप से होता है। विद्यालय में बालक की औपचारिक शिक्षा की शुरूआत होती है और समय≤ पर उसकी प्रगति का मापन, मूल्यांकन की विभिन्न विधियों द्वारा किया जाता है। विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उसके पारिवारिक, सामाजिक आर्थिक पर्यावरण के साथ-साथ मनो-शारीरिक गुणों, तकनीकी तथा जलवायु सम्बन्धी कारकों का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है।

व्यक्तियों के व्यक्तित्व के निर्घारण में आकांक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आकांक्षा के समानार्थी के रुप में महत्वाकांक्षा, इच्छा एवं लालसा जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यक्तियों की समस्त चेष्टाओं और भावनाओं को उत्पन्न करने की मन की सूक्ष्म शक्ति को शाब्दिक अर्थ में 'इच्छा' कहा जाता है। व्यक्तियों की जागरूक चेतना ही इच्छा व आकांक्षा है जो अपने एक रूप में मनुष्य में अपरिमित उत्साह भर कर उसे सक्रिय बनाती है। व्यक्तियों के उत्साह हीन मन के द्वारा किया गया प्रयास असफल हो जाता है, इसलिए काम करने से पहले अभिप्रेरित वातावरण तैयार करना आवश्यक होता है, जिसे आकांक्षा कहा जाता है।

प्रायः हम दिन प्रतिदिन के जीवन में देखते है कि कुछ विद्यार्थी जितना कार्य करते हैं उससे भी अधिक कार्य करने की इच्छा प्रकट करते हैं। तो दूसरी ओर ऐसे भी विद्यार्थी होते है जो उनसे भी कम कार्य करने की इच्छा प्रकट करते है, लेकिंन कार्य उससे अधिक करते है। यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि विद्यार्थियों के कार्य करने की मात्रा एवं क्षमता उस कार्य को सोचने की मात्रा उसके आकांक्षा स्तर पर आधारित होती है तथा यही आकांक्षा स्तर विद्यार्थियों के लक्ष्यों को निर्धारित करने में मदद करता है।

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आकांक्षा या महत्वाकांक्षा होती है और उसका सम्बन्ध जीवन के कार्यों से होता हैं। आकांक्षा का स्तर प्रत्येक व्यक्ति में समान नही होता तथा व्यक्ति इस आकांक्षा के आधार पर लक्ष्य निर्धारित करता है। यह व्यक्ति की उस सीमा की ओर इंगित करता है जिस सीमा तक व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहता है। आकांक्षा स्तर उच्च होने पर अनेक बार व्यक्ति प्रेरित होकर कार्य करता है। सफलता को प्राप्त करने के पश्चात् आकांक्षा स्तर भी उच्च हो जाता है, कभी-कभी इसके कारण मनुष्य के मन में अन्तर द्वन्द भी उत्पन्न हो जाता है। जैसे- एक व्यक्ति का आकांक्षा स्तर तो बहुत ऊँचा है परन्तु योग्यता की कमी या अन्य कारणों से वह उस स्तर तक पहुचने में असमर्थ है तो उसमें इस असमर्थता की चिन्ता उत्पन्न हो जाती है, जो कभी मानसिक असन्तुलन का कारण बन जाती है।

प्रायः यह देखा जाता है कि आशावादी व्यक्ति का आकांक्षा स्तर सदैव ऊँचा होता है, जबकि निराशावादी व्यक्ति का आकांक्षा स्तर नीचा होता है। इसी प्रकार इसकी असफलता का भी उस पर प्रभाव पड़ता है। इसके माध्यम से प्रायः लक्ष्य निर्धारण कर अध्ययन किया जाता है। इसे एक प्रकार से सामाजिक प्रेरक भी माना जाता है। क्योकि जिस संस्कृति में व्यक्ति का पालन-पोषण होता है उसी के अनुरूप अपने लक्ष्यों का निर्धारण करता है।

जिस स्थिति तक इन मानवीय लक्ष्यों की पूर्ति होती है उसकों हम आकांक्षा स्तर की सीमा कहते सकते है। वैसे तो पूर्व वर्णित कथनानुसार आकांक्षाओं की कोई सीमा-परिसीमा नही है, परन्तु विभिन्न मापकों के आधार पर इसे आकांक्षा स्तर को विभिन्न रूपों मे ग्रहण किया है। जबकि शिक्षित-अशिक्षित व्यक्ति आकांक्षा का आशय स्वानुभव के आधार पर स्वविचारों के प्रयुक्तीकरण से लगाता है, यही गहन स्तर पर पहुँच कर विशिष्ट दर्शन बन जाता है।

आकांक्षा का परिचय सबसे पहले लेविन की शिष्या डेम्बों ने कराया था, किन्तु इस दिशा में गहन अध्ययन के पश्चात् विचार प्रकट करने का श्रेय हांपी को है। हांपी ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन के आधार पर बताया कि लक्ष्य निर्धारण को व्यवहार के अनेक कारक प्रभावित करते है। इस पर वैयक्तिक भिन्नताओं का भी प्रभाव पड़ता है, क्योकि कुछ व्यक्तियों का आकांक्षा स्तर सदैव उच्च होता है कुछ का निम्न। कुछ व्यक्ति अपने लिए उचित आकांक्षा स्तर निश्चित करने में असमर्थ होते है जबकि अन्य व्यक्ति इस सम्बन्ध में यर्थाथवादी होते है एवं अपने पूर्व अनुभव के आधार पर अपना आकांक्षा स्तर निर्धारित करते है। इससे अतिरिक्त भी इस प्रकार प्रत्यय से सम्बन्धित कुछ कारक जैसे- व्यक्ति के लक्ष्य का आत्म-निष्ठ स्वरूप, लक्ष्य की प्राप्ति पर तनाव की समाप्ति, भग्नाशा की समस्या, चिन्ता अभिप्रेरणा तथा तात्कालिक पूर्व अनुभवों का प्रभाव। आकांक्षा स्तर को प्रभावित निम्न घटक प्रभावित करते है-

- कार्य की सफलता या असफलता आकांक्षा स्तर को उच्च एवं निम्न श्रेणी का बनाती है। यदि विद्यार्थियों को सफलता मिल जाती है तो वह आगे होने वाली परीक्षाओं को सुगमता से उत्तीण कर लेता है और असफलता मिलने पर विद्यार्थी का उत्साह कम हो जाता है।

www.ignited.in

- आकांक्षा स्तर पर समूह तथा सामूहिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति हमेशा अपने कार्यों की तुलना दूसरों से करके अपने को समायोजित करता है।

- आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व की विशेषताओं पर भी निर्भर करता है, जिसमें अहं संयोग का प्रमुख स्थान है।

आकांक्षा स्तर का सम्बन्ध भी अहम् शक्ति से है। अहम् के प्रति लगाव पर उल्लेखनीय कार्य आर. बी. कैटल ने भी किया है। उन्होने अपने विचारों में बताया कि अहम् शक्ति से यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति की अहम् दृष्टि से पूर्ण है या नही। दूसरे शब्दों में वे व्यक्ति जो उच्च प्रत्याशा रखते है परन्तु निष्पत्ति उतनी नही होती है। इसी प्रकार जिन व्यक्तियों का आकांक्षा स्तर उच्च होता है उनका अहम् उच्च होता है। आर. बी. कैटल के अनुसार अहम शक्ति का मुख्य लक्षण, दृढ़ता, कार्यरत होना, आत्म निर्भरता तथा विश्वास आदि है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

अध्ययन का शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व है, प्रारम्भिक शिक्षा को यदि शिक्षा की आधारशिला कहा जाता है, तो माध्यमिक शिक्षा को उसका भवन तो वही उच्च शिक्षा को उसका मुकुट कहा जाये तो यह अतिशयोक्ति नही होगा। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने विजन-2020 में कहा कि भारत में विकास की धुरी युवा है और ये युवा तभी विकसित देश बना सकते है जब यें अपनी मनोवृत्ति को बदलें, हम तभी विकसित हो सकतें हैं, जब तक हम अपने में आकांक्षा स्तर के उच्च स्तर को विकसित नही करेगे, तब तक भारत को विकसित देश के रूप देखने की इच्छा किताबों में बन्द होकर ही रह जायेगी। देश के युवाओं को विकास की राह दिखाने से पूर्व किशोरों को भटकाव से बचाना होगा क्योकि जो आज किशोर है वही कल का युवा है। क्योकि यह अवस्था किशोरावस्था के नाम पुकारी जाती है। किशेरावस्था को बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य सन्धिकाल माना जाता है। किशोरावस्था में अत्यधिक संवेगात्मक उथल-पुथल के कारण के जीवन का सबसे कठिनकाल भी माना गया है। किशोर शारीरिक एवं मानसिक रूप से बहुत ही शक्तिशाली एवं सक्रिय होते है पर आकांक्षा स्तर के दृष्टिकोण से अस्थिर। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आयु प्रायः 14 से 18 वर्ष के मध्य होती है। अस्थाना (2006) ने निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर छात्र एवं छात्राओं के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक में सार्थक अन्तर नही पाया गया। जबकि उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया गया। लेकिन लक्ष्य प्राप्ति के कुल प्रयास प्राप्तांक में सार्थक नही पाया गया। सिंह (2012) ने स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सांवेगात्मक अस्थिरता, तनाव का सामना करना पड़ता है। क्योंकि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले किशोर समाज में स्थान एवं कैरियर के प्रति चिन्तित रहते हैं। यदि किशोरों के आकांक्षा स्तर का विकास सही ढंग से नही होगा, तो वह सही निर्णय लेने में सक्षम नही होगें। सामाजिक दृष्टि से देखा जाय, तो सामाजिक मूल्यों, समाज के आदर्शों के पालन में आकांक्षा स्तर काफी हद तक उत्तरदायी है। किशोरों में वांछित आदतों का निर्माण करने, आवांछित आदतों को दूर करने तथा सन्तुलित व्यकित्व का निर्माण करने के लिए मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन का विशेष महत्व है। किशोरों की समस्याओं की पहचान करके तथा उनके आकांक्षा स्तर का विकास करके लक्ष्य निर्धारण में उनका मार्गदर्शन किया जा सकता है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

शोध में प्रयुक्त शब्दों का संक्रियात्मक परिभाषीकरण

उच्च माध्यमिक स्तर:- प्रस्तुत शोध में उच्च मध्यमिक स्तर से आशय माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा 11 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से हैं।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि - प्रस्तुत शोध में माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा-11 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के कक्षा-10 के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर 75 प्रतिशत प्राप्तांक या 75 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक पाने वाले विद्यार्थी अर्थात् सम्मान सहित उत्तीण विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी मानकर अध्ययन किया गया है।

निम्न शैक्षिक उपलब्धि: प्रस्तुत शोध में माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 11 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के कक्षा-10 के

प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर 33 प्रतिशत से अधिक पर 60.00 प्रतिशत प्राप्तांक से कम प्राप्तांक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अर्थात तृतीय श्रेणी में उत्तीण विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक उपलब्धि का विद्यार्थी मान कर अध्ययन किया गया है।

आकांक्षा स्तर- प्रस्तुत शोध में आकांक्षा स्तर के मानकीकृत परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांको को आकांक्षा स्तर माना गया है। जिसमें विद्यार्थियों की लक्ष्य भिन्नता, उपलब्धि भिन्नता एवं लक्ष्य तक पहुचने से सम्बन्धित पक्षों का अध्ययन किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:

शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य है-

1. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों के माध्य फलांकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांकों के माध्य फलांकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें:

शोध अध्ययन की शोध परिकल्पनायें निम्न है-

H1 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों सार्थक में अन्तर होता है।

H2 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक सार्थक अन्तर होता है।

H3 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक सार्थक अन्तर होता है।

अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध इटावा जिला में माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक परिसीमित है।

शोध विषय अध्ययन की शोध विधि (Methodolgoy of Research Study)

प्रस्तुत शोध अध्ययन स्वरूप के अनुसार परिमाणात्मक शोध (Quantitative research) है। जबकि अनुसंधान की प्रकृति के आधार पर वर्णानात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का शोध कहा जा सकता हैं।

जनसंख्या (Population)

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या से आशय माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि बाले समस्त विद्यार्थियों है।

न्यादर्श (Sample)

प्रस्तुत शोध में इटावा जिला के माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का चयन अध्ययन के न्यादर्श के रूप में किया गया।

न्यादर्शन विधियाँ (Sample Techniques)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से विद्यालयों का तथा उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श का आकार

प्रस्तुत शोध में इटावा जिला के माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के 400 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। जिसमे क्रमशः 200-200 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का चयन कर अध्ययन किया गया।

www.ignited.in

प्रदत्त संकलन उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन लिए डॉ. एम. ए. शाह एवं डॉक्टर महेश भार्गव द्वारा मानकीकृत आकांक्षा स्तर मापनी चर से सम्बन्धित प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण में विद्यार्थियों के दस अभ्यास प्रयास है। जिसमें विद्यार्थियों के वर्तमान प्रयास का प्रत्याशा प्राप्तांकों एवं तात्कालिक पूर्व प्रयास का वास्तविक प्राप्तांकों को ज्ञात किया गया। इसके बाद उनके अन्तर से लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक ज्ञात का लिया गया है। इसी प्रकार उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक ज्ञात करने के लिए वर्तमान प्रयास का वास्तविक प्राप्तांक से वर्तमान प्रयास का प्रत्यासा प्राप्तांकों को घटाकर प्राप्त किया गया है। एक प्रयास के 30 सेकेंड का समय दिया जाता था। परीक्षण प्रशासन में लगभग 20 मिनट समय लगता हैं।

प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इटावा जिला में माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों की परीक्षा के प्राप्तांक द्वितीयक आंकड़ों के रूप में एवं आकांक्षा स्तर चर के मापन के लिये मानकीकृत परीक्षण आकांक्षा स्तर मापनी द्वारा प्राप्त आंकड़े प्राथमिक आंकड़ों के रूप में प्रयोग किये गये है।

सांख्किीय प्रविधियाँ

शोध अध्ययन में प्राप्तांकों के विश्लेषण के लिये माध्य, मानक विचलन एवं टी अनुपात का प्रयोग किया गया। 'टी'- परीक्षण का मान निम्नलिखित सूत्र की सहायता से ज्ञात किया गया है-

$$t = M_1\text{-}M_2/\sigma D$$

M_1 - प्रथम समूह का मध्यमान

M_2 - द्वितीय समूह का मध्यमान

σD - दो मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

सांख्किीय प्रविधियाँ- प्रस्तुत शोध में सार्थकता स्तर .05 निर्धारित किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

H_1 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है।

Ho_{01} उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के 't' परीक्षण मान के परिणामों का सारांश

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	दो मध्यमानों के बीच अन्तर (D)	दो मध्यमानों के अन्तर की प्रमापित त्रुटि (σ_D)	स्वतन्त्रता (df)	t मान	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	5090	2.6622	.6900	.2706	398	2.5500	.05
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	4400	2.7492					

सारणी-1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है, कि परिगणित t = 2-550 का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम तालिका मान क df = 398 के लिए .05 = 1.97 से अधिक है, इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों मे सार्थक अन्तर नही है, अस्वीकार की जाती है। अतः शोध परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है, स्वीकार की जाती हैं। सिंह (2012) ने भी अपने शोध निष्कर्ष में भी पाया कि स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

H_2 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक सार्थक अन्तर है।

H_{02} उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के 't' परीक्षण मान के परिणामों का सारांश

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	दो मध्यमानों के बीच अन्तर (D)	दो मध्यमानों के अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि (σ_D)	स्वतन्त्रता (df)	t मान	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	2.701	2.1831	.4205	.2025	398	2.076	.05
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	2.280	1.8531					

सारणी-2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है, कि परिगणित t = 2-076 का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम तालिका मान df = 398 के लिए .05 = 1.97 से अधिक है, इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांकों मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है। अतः शोध परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर स्वीकृत होती है। सिंह (2012) ने भी अपने शोध निष्कर्ष में भी पाया कि स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर हैं।

H_{03} उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक सार्थक अन्तर है।

H_{03} उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 3

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के 't' परीक्षण के परिणामों का सारांश

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	दो मध्यमानों के बीच अन्तर (D)	दो मध्यमानों के अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि (σ_D)	स्वतन्त्रता (df)	t मान	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	-1.24	2.58	-.48	.23	398	-2.006	.05
निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी	200	-.76	2.58					

सारणी-3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है, कि परिगणित t = -2-006 का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम तालिका मान df = 398 के लिए .05 त्र 1.97 से अधिक है, इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांकों मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है। शोध परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है, निरस्त नहीं की जा सकती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों से अधिक है, सांख्यिकी परीक्षण परिणाम में भी अन्तर सार्थक पाया गया। प्रजापति (2018) ने भी अपने शोध अध्ययन में पाया कि जनजाति एवं गैर जनजाति के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर हैं।

शोध निष्कर्ष:-

1. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों मे सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर की अपेक्षा अधिक पाया गया तथा सांख्यिकीय रूप में भी सार्थक पाया गया।

2. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक के माध्य फलांकों मे सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक की अपेक्षा अधिक पाया गया।

3. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक के माध्य फलांकों मे सार्थक अन्तर नही पाया गया। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि भिन्नता

www.ignited.in

प्राप्तांक की अपेक्षा अधिक पाया गया। लेकिन सांख्यिकीय रूप में सार्थक नही पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ:-

शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों के लिए अधिगम प्रक्रिया में एक सकारात्मक एवं सक्रिय अभिप्रेरक के रूप में कार्य करती है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों के जीवन लक्ष्यों को उच्च स्तर की ओर भी ले जाने का कार्य करती है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों को आकांक्षा स्तर में वृद्धि के लिए प्रोत्साहित करती है। जो विद्यार्थी सफल हो जाते है, उनका भावी आकांक्षा स्तर अधिक ऊँचा हो जाता है जबकि असफलता प्राप्त विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर प्रायः नीचा हो जाता है। अतः अध्यापकों को विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उच्च करने का प्रयास करना चाहिए जिससे उनका आकांक्षा स्तर भी उच्च हो सकें। शैक्षिक उपलब्धि को ऊँचा उठाने के लिए उन्हें अभिप्रेरित, प्रोत्साहन, प्रशंसा पुरस्कार, दण्ड एवं रूचि जाग्रत करने जैसे उपाय कियें जाने चाहिए। आज के समय की यह माँग एवं आवश्यकता है कि विद्यालयों के पाठ्यक्रम में आकांक्षा स्तर के विकास से संबन्धित गतिविधियों को शामिल किया जाय, शिक्षकों को इस संबन्ध में विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जाये। अभिभावकों को उनके पाल्यों में उचित आकांक्षा स्तर का विकास करने हेतु उनसें सहयोग लिया जाये तथा उन्हे प्रोत्साहित व प्रशिक्षित किया जाय तथा इन सभी गतिविधियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र-छात्राओं को विशिष्ट प्रोत्साहन दिया जाये। छात्रों की उनकी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार आकांक्षा स्तर के निर्धारण के प्रयास किये जाने चाहिए। जिससे राष्ट्र के लिए अच्छे नागरिक तैयार किये जा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन, अस्थाना, विजया एवं अन्य (2008)- शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यकीय, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।

2. अस्थाना, पंकज (2006)- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गणितीय उपलब्धि पर आकांक्षा स्तर, चिन्ता तथा अध्ययन की आदतों के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर. http://handle.Net/10603/268722, Retrived from http://Shodhganga@infibiable.net.in.

3. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता अलका (2013)- अनुधान संदर्शिका, सम्प्रत्यय, कार्यविधियां, प्रविधियां, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

4. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता अलका (2017)- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिदान्त एवं व्यवहार, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

5. लाल, रमन बिहारी एवं शर्मा, कृष्णकान्त (2013)- भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास, समस्यायें, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपों प्रकाशक।

6. मंगल, एस. के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, पी0 एच0 आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.

7. सिहं, अरुण कुमार (2010)- मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, पटना, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक।

8. सिहं, गया एवं राय, अनिल कुमार (2013)- शैक्षिक अनुसंधान की विधिया, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपों प्रकाशक .

9. सिंह, राम बाबू (2012). स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीविका वरीयता, समायोजन तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन. शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम. जे. पी. विश्वविद्यालय, बरेली. http://handle.Net.Retrived from http://Shodhganga@infibiable.net.in.

10. शर्मा, आर. ए. (2013). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपों प्रकाशक।

11. श्रीवास्तव, डी. एन. (2005)- सांख्यकीय एवं मापन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

12. श्रीवास्तव, डी. एन. (2005)- व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

13. भटनागर, ए. बी. एवं मीनाक्षी भटनागर (2013)- मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं

मूल्यांकन, मेरठ, आर. लाल बुक डिपों प्रकाशक।

14. Bhargava, M. & Shah, M. A. ¼2012½. Manual for Level of Aspiration Measure. Agra, National Psychological Corporation.

15. Prajapati, Durgesh Kumar (2018). A Comparative Study of Self Concept, Level of Aspiration and Academic Achievement of Tribal and Non Tribal Students, Education, Unpublished thesis, Banaras Hindu, University, Varanasi. http://handle.net/10603/267012. Shodhganga@infibiable.net.in

16. www.sodhganga@inflibnet.nic.in

Corresponding Author

Shiv Narayan*

Senior Research Fellow, Education Department, Chatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur, 208024

shiv57163@gmail.com